DR. P. K. Singh – Guest Teacher
Sem VI Core-14
Deptt of History A.C. Rajdhanwar

प्रश्न युवा तुर्क आन्दोलन पर प्रकाश डालें।

उत्तर- तुर्की के राष्ट्रीय आन्दोलन के इतिहास में युवा तुर्क आन्दोलन अपना एक विशिष्ट स्थान रखता है। तुर्की के आन्दोलनकारी युवकों ~~का~~ उद्देश्य सुल्तान की निरंकुशता को समाप्त कर जनतंत्र को नवजीवन देना था। उन लोगों ने ही सिर्फ प्रथम निरंकुशता रूपी वृक्ष को उखाड़कर खाली भूमि पर ~~[illegible] रूपी वृक्ष को उखाड़ कर~~ प्रजातंत्र रूपी वृक्ष को लगाया जिसका फल बाद के पीढ़ियों ने बड़े चाव से खाया

अब्दुल हमीद के निरंकुशता के परिणाम स्वरूप तुर्की के उदारवादियों में बड़ा असंतोष फैला। सिवरी मानो के संधि से लाग को तुर्की के एक विशाल भूभाग पर अधिकार कर लिये तथा तुर्की को आर्थिक क्षति उठानी पड़ी। जिससे युवा तुर्क काफी क्षुब्ध हो उठे। वे लोग तुर्की के शासन व्यवस्था तथा सामाजिक व्यवस्था में आमूल परिवर्तन चाहते थे।

युवा तुर्कों ने जब अपना आन्दोलन तेज कर दिया तो राष्ट्रवादियों को देश से बाहर निकाल दिया। इन क्रान्तिकारियों ने देश के बाहर तुर्की आन्दोलन का रूप देकर तैयार किया तथा कुस्तुन्तुनिया में अमेरिकन मिलिटरी कालेज के छात्रों ने एकता और प्रगति नामक समिति का संगठन किया। इसका मुख्य उद्देश्य तुर्की को पतन से बचाना था।

एकता और प्रगति समिति अपने नाम के अनुकूल अपने पथ पर आगे बढ़ रही

समिति ने अपना मुख्य कार्यालय जेनेवा में रखा तथा 1898 में अपनी मांगो को तेज कर दिया। ये लोग निरंकुश राजतंत्र को समाप्त कर देना चाहते थे। अब्दुल हमीद ने कूटनीति द्वारा आन्दोलन कारी नेताओं की मांगों को पूर्ति कर देने का आश्वासन दिया तथा उन्हें अपने देश में बुलाकर कैद कर लिया।

क्रान्तिकारियों ने अपना हिम्मत नहीं हारा। इन लोगों ने राजतंत्र को समाप्त करने के उद्देश्य से कई क्रान्तिकारी दल का निर्माण किया। क्रान्तिकारी युवा तुर्क लोग क्रान्ति की योजना बना रहे थे इधर और असंतुष्ट सेना भी क्रान्ति के लिए तैयार था। 1908 में घोषणा किया कि 1876 का संविधान लागु नहीं किया गया तो कुस्तुन्तुनिया पर बोल देगा। अन्त में अब्दुल हमीद ने संविधान को लागु करने, संसद बुलाने तथा प्रेस पर से नियन्त्रण हटाने को तैयार हो गया। क्रान्तिकारी को विजय हासिल हुआ। उदारवादी युवा तुर्क के सफलता से काफी खुश थे। अब्दुल हमीद को गद्दी से उतरना पड़ा तथा मुहम्मद पाचवा गद्दी पर बैठा। जिन्हें राजनीति में कोई दिलचस्पी नहीं थी।

इस प्रकार देखते हैं कि युवा तुर्कों का मुख्य उद्देश्य राजतंत्र को समाप्त कर जनतंत्र की स्थापना करना तथा तुर्की को विदेशी चंगुल से मुक्त कर प्रगति के

17-04-2020

पथ पर अग्रसर करना था। तुर्की के लोग अभी इतना शिक्षित नहीं थे कि वे धर्म निरपेक्ष की बात समझ सकते थे अतः युवा तुर्कों ने धर्मनिरपेक्ष राज्य की घोषणा की तो इस्लाम समर्थकों ने इसे पश्चिमी सभ्यता समझकर उसका विरोध करने लगा।

युवा तुर्कों ने एक ही साथ पान ओटोमेनिज्म पान इस्लामिज्म तथा पान तुरानिज्म को लागु कर भारी भूल की। कोई भी शासन एक ही नीति से सफल हो सकती है विभिन्न नीतियों से लोगों में अविश्वास तथा अस्थिरता आ जाती है। युवा तुर्कों के उद्देश्य अच्छे रहने के बावजूद परिस्थितियों ने असफलता का मार्ग प्रशस्त किया क्योंकि बोस्निया, हर्जेगोविना बुल्गारिया तथा क्रीट की घटनाओं ने मुसलमान तथा इसाई के बीच शत्रुता उत्पन्न कर दी। बाल्कन युद्ध तथा प्रथम विश्वयुद्ध में तुर्की के फंस जाने के कारण आन्दोलन में नरमी आ गई। युद्ध में हानी का दोषी युवा तुर्कों को ठहराया गया। जिससे जनता का विश्वास उनसे उठता गया। तुर्कों ने गलत धार्मिक नीति से साम्राज्य का पतन आवश्यक कर दिया।

इस प्रकार युवा तुर्कों की अकुशल शासन क्षमता ने उनके अच्छे उद्देश्य की पूर्ति में बाधा उत्पन्न हुआ तथा तुर्की यूरोप का मरीज मरीज बना रह गया। परन्तु आन्दोलन के दूरगामी परिणाम भी निकले। धर्म की महत्ता कम होने से भविष्य में मुस्तफा कमाल पाशा ने धर्मनिरपेक्ष राज्य की घोषणा की। असफलताओं के बावजूद इसने राष्ट्रीय भावनाओं से सम्बन्धित कार्यों का प्रतिपादन किया जिससे आगे चलकर तुर्की के नव निर्माण में मुस्तफा कमाल पाशा को सहायता पहुंचाई।

— x —

17-04-2020 07